

শ্রীঃ  
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ  
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।  
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

শ্রী মেল্পপত্তূর্ নারায়ণভট্টতিরি ঝিরচিতম্  
॥শ্রীমন্নারায়ণীয়ম্ ॥

দশক - ৭১

*This document\* has been prepared by*  
**Sunder Kidambi**  
*with the blessings of*  
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্  
**His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam**

---

\*This was typeset using Bengali for T<sub>E</sub>X.

শ্রীঃ  
শ্রীমতে কৃষ্ণায় পরব্রহ্মণে নমঃ  
শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

॥শ্রীমন্নारायणीयम् ॥

दशक - ११

केशिमथनवर्णनं षोडशधरवर्णनं च

यन्नेषु सर्वेष्वपि नारकेशी  
केशी स भोजेशितुरिष्टबन्धुः।  
त्वां सिन्धुजाराप्य इतीर मत्वा  
सम्प्राप्तवान् सिन्धुजराजिरूपः ॥ १ ॥

गन्धर्वतामेष गतोपि रुक्मि-  
र्नादैः समुद्देजितसर्लोकः।  
भरद्बिलोकारधि गोपराटीं  
प्रमर्द्य पापः पुनरापतत् त्वाम् ॥ २ ॥

तान्कर्ग्यार्पिताङ्घ्रेश्वर तान्कर्ग्य एष  
चिक्नेप रक्नेाभुरि नाम पादम्।  
भृगोः पदाघातकथां निशम्य  
स्वेनापि शक्यं तदितीर मोहात् ॥ ३ ॥

प्ररथयन्नस्य खुराथलं द्रा-  
गमुं च चिक्नेपिथ दूरदूरम्।  
सम्मुच्छितोपि ह्यतिमुच्छितेन  
क्रोधाङ्गणा खादितुमाद्रुतसुराम् ॥ ४ ॥

त्वां राहदण्डे कृतधीश्च राहा-  
दण्डं न्याधास्तस्य मुखे तदानीम्।  
तद्वृद्धिरुद्धश्चसन्नो गतासुः  
सन्तीभरन्नप्ययमैक्यमागात् ॥ ५ ॥

আলম্বমাত্রেন পশোঃ সুরাণাং  
 প্রসাদকে নৃত্ন ইরাশ্বমেধে।  
 কৃতে ত্বয়া হর্ষরশাত্ সুরেন্দ্রা-  
 স্তরাং তুষ্টুবুঃ কেশরনামধেষম্ ॥ ৬ ॥

কংসায় তে শৌরিসুতত্বমুক্তরা  
 তং তদ্বধোতকং প্রতিরুধ্য বাচা।  
 প্রাপ্তেন কেশিক্ষপণারসানে  
 শ্রীনারদেন ত্বমভিষ্টুতোভূঃ ॥ ৭ ॥

কদাপি গোপৈঃ সহ কাননান্তে  
 নিলাযনক্রীডনলোলুপং ত্বাম্।  
 মযাস্বজঃ প্রাপ দুরন্তমাযো  
 র্যোমাভিধো র্যোমচরোপরোধী ॥ ৮ ॥

স চোরপালাযিতবল্লরেষু  
 চোরাযিতো গোপশিশূন্ পশুংশ্চ।  
 গুহাসু কৃত্বা পিদধে শিলাভি-  
 স্তরযা চ বুধরা পরিমর্দিতোভূত্ ॥ ৯ ॥

এবং ঝিধৈশ্চাদভূতকেলিভেদৈ-  
 রানন্দমূর্ছামতুলাং ব্রজস্য।  
 পদে পদে নূতনযন্নসীমাং  
 পরাস্বরপিন্ পরনেশ পাযাঃ ॥ ১০ ॥

\*\*\*\*\*